सभी लोग भगवान को मंदिर, मस्जिद, चर्च में ढुंढते हैं लेकिन उन्हें भगवान कहीं भी नहीं मिलते। मानव सेवा ही भगवान की प्राप्ति है।
बेसहारा लोगों की सेवा कर भगवान को प्राप्त करें और इस धरती को स्वर्ग बनायें।

जाना, विकलांग हो जाना तथा रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

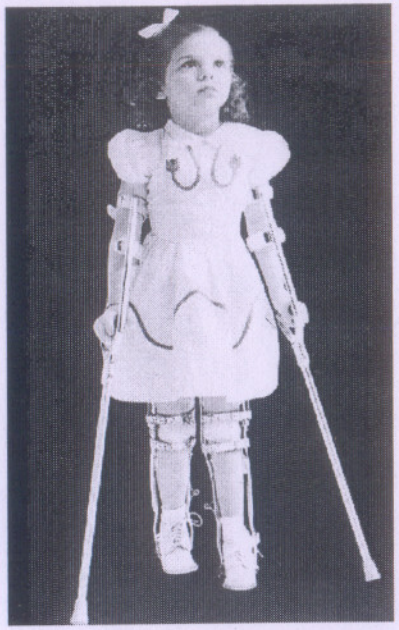

बचाव :

1. स्वच्छ जल का प्रयोग करें।
2. पायखाने के बाद हाथ को साबुन से अच्छी तरह से साफ रखें।
3. कुछ भी खाने से पहले हाथ को अवश्य धोयें।
4. आसपास सफाई रखें।
5. लक्षण पहचान के बाद तुरन्त चिकित्सक के परामर्श अनुसार इलाज करायें।

सन् 1964 में **चिकित्सकीय बैज्ञानिक अलवर्ट शाबीन** पोलियो की बिमारी का टीका निकाल चुके हैं। अफ्रीका महाद्वीप के अलावा पोलियो का प्रकोप और जगहों पर बहुत ही कम है। भारत में पोलियो की बूँद समय-समय पर बच्चों को पिलाया जा रहा है। 21वीं सदी तक दुनिया में इस बिमारी से काफी लोगों की मौत हो चुकी है। जिसमें बच्चों की संख्या सबसे ज्यादा है। अनेकों प्रकार की बिमारियों से बचने के लिए संस्था का हेल्थ लीफलेट पढ़ें जिसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी पूर्ण जानकारियाँ दी गयी है।

बिमारियाँ जानलेवा है,
जानकारियाँ बचाव है।

सेवा ही धर्म है!!!

नवजीवन फाउण्डेशन

नवजीवन फाउण्डेशन

गरीब, बेसहारा लोगों की सेवा ही भगवान की सेवा है।!!!

मुख्य कार्यालय :
252, नजर सिंह प्लेस, दूसरी मंजिल, प्लाट नं0 एस-11,
सन्त नगर, नई दिल्ली-110065
दूरभाष: 011-26238444, फैक्स: 011-66620550
मोबाईल नं0: 09313748678, 09213783579
ईमेल : info@navjivanfoundation.org
navjivanfoundation@gmail.com
बेवसाईट: www.navjivanfoundation.org
शाखा: नवजीवन फाउण्डेशन
533, बहादुरगंज (साहबगंज)
फैजाबाद-224001, उत्तर प्रदेश

"आप संस्था पर विश्वास करें, संस्था इसे साबित आपके सहयोग से करेगी।"

"पोलियो जागरूकता आन्दोलन"

पोलियो नाम के बारे में सभी लोगों को पता है। परन्तु पोलियो के बारे में सभी लोगों को विस्तृत जानकारियाँ अभी तक नहीं हो पायी है। चिकित्सक वैज्ञानिक जैकबहैनी को सन 1840 में पोलियो बिमारी के बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी प्राप्त हुई। लेकिन पोलियो के संक्रमण और कैसे शरीर में प्रवेश करते हैं इसके बारे में पूर्ण जानकारी चिकित्सक वैज्ञानिक कार्ल लैण्डस्टेइनर ने भिन्न-भिन्न शोधों के द्वारा सन् 1908 में दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से बताया कि पोलियो के संक्रमण जीवाणु दुषित जल और पायखाने के बाद बिना साफ किये हाथ के वजह से पैदा होते हैं। यह शरीर में प्रवेश करने के बाद सीधे खून के प्रवाह की नसों में पहुँच जाते हैं और शरीर को संक्रमित कर देते हैं। जिससे शरीर मुरझा जाता है और इस संक्रमण से शरीर का कोई भी हिस्सा निर्जीव हो सकता है या सुख सकता है।

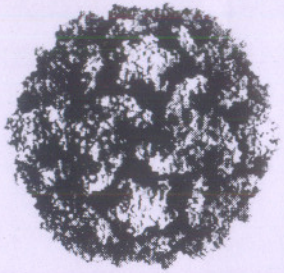

पोलियो शब्द ग्रीक देश का शब्द है। चिकित्सा विज्ञान में पोलियो को पोलियोमाईलिटिस (Poliomyetitis) और इनफेनटाइल पैरालाइसिस Infantile Paralysis के नाम से जाना जाता है।

लक्षण : दो सप्ताह से ज्यादा बिमार रहना। शरीर में लगातार कमजोरी होना। अगर इस प्रकार के लक्षण दिखाई देता है तो चिकित्सक परामर्श द्वारा खून की जाँच करवायें। पोलियो संक्रमित जीवाणुओं के द्वारा होता है। यह दो प्रकार का है।

अ) असिम्टोमेटिक पोलियो (Asymptomatic Polio)

ब) सिम्टोमैटिक पोलियो (Symptomatic Polio)

अ) असिम्टोमेटिक पोलियो : इसमें लक्षण 95% लगभग पता नहीं चलता है। यह चिकित्सक जाँच या खून की जाँच द्वारा ही पता चलता है।

ब) सिम्टोमैटिक पोलियो : इसमें लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह तीन प्रकार का होता है :

1. **अबारटिव पोलियो** (Abortive Polio)

लक्षण : जुकाम के साथ बुखार, श्वास लेने में परेशानी होना, हैजा, बुखार, गले में दर्द महसूस होना।

उपचार : लक्षण के पहचान के बाद चिकित्सक द्वारा इलाज कराये।

2. नान पैरालाइटिक पोलियो (Non Paralytic Polio)

लक्षण : न्यूरोलोजिकल सिस्टम में परेशानी होना जैसे कि उजाले को बर्दाश्त न कर पाना। गर्दन का अकड़ जाना आदि।

उपचार : सही समय पर पहचान से इलाज सम्भव है।

3. पैरालाइटिक पोलियो (Paralytic Polio)

लक्षण: यह बिमारी से कमजोर शरीर पर आक्रमण करता है। इसके जीवाणु तंत्रिका नसों पर आक्रमण करते हैं। जिससे शरीर के अंग का पतला हो